514

MASA-05

June - Examination 2017

M.A. (Final) Sanskrit Examination

गद्य तथा काव्य

Paper - MASA-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

Note: The question paper is divided into three sections A, B and C. Write answers as per the given instructions.

निर्देश : यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों 'अ', 'ब' और 'स' में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(खण्ड – अ) **$8 \times 2 = 16$**

(अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न) (अनिवार्य)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दें । अपना उत्तर एक शब्द एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में सीमित करें। प्रत्येक प्रश्न दो अंकों का है।

1) (i) 'शिव महिम्नः स्तोत्र' के रचयिता का नाम लिखिये।

(ii) बाणभट्ट की रचना कादम्बरी का मूल उत्स क्या है ?

(iii) माघ के शिशुपालवध में कौन से तीन गुण हैं ?

(iv) शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग में किसका वर्णन है ?

(v) कादम्बरी में कौन से रस की प्रधानता है ?

(vi) कवि बिल्हण ने विक्रमांकदेवचरितम् के प्रथम सर्ग में सबसे अधिक वर्णन किस राजा का किया है।

(vii) बिल्हण की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिये।

(viii) विक्रमांकदेवचरितम् में बिल्हण ने किस रीति का प्रयोग किया है?

(खण्ड – ब) **4 × 8 = 32**

(लघु उत्तरात्मक प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित करें। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिये :

'देव ! द्वारस्थिता सुरलोकमारोहतस्त्रिशङ्कोरिव कुपितशतमरवहुङ्कार–निपातिता राजलक्ष्मीर्दक्षिणा पथादागता चाण्डाल–कन्यका पञ्जरस्थं शुकमादाय देवं विज्ञापयति ''सकलभुवनतल–सर्वरत्नानाम् उदधिरिवैकभाजनं देवः विहंगमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभुवनतलरत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमेनमादायागताऽहमिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुम् इति, एतदाकर्ण्य 'देवःप्रमाणमित्युक्त्या विरराम।

अथवा

एकस्मिंश्च जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य कथमपि पितुरहमेवैको विधिवशात् सूनुरभवम् । अतिप्रबलया चाभिभूता ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। आभमतजाया–विनाश शोकदुःखितोऽपि खलु तात सुतस्नेहादभ्यन्तरे निगृह्य पटुप्रसरमपि शोकमेकाकी सत्संवर्धनपर एवाभवत्।

3) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

गृहणन्तु सर्वेयदिवा यथेष्टं नास्तिक्षतिःकपि कवीश्वराणाम्।।
रत्नेषु लुप्तेषु बहुएवमत्यैर्द्यापि रत्नाकर एव सिन्धुः।।

अथवा

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषे प्रयत्नः सुमहान्खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टक–जालमेव।।

4) निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिये :–

यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माघवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।

अथवा

नैतल्लध्वपि मूयस्या वचो वाचाऽतिशय्यते।
इन्धनौथघगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्।।

5) कादम्बरी के अनुसारजाबालि आश्रम का वर्णन कीजिये।

6) 'शिवमहिम्नः स्तोत्र' के महत्व पर प्रकाश डालिये।

7) 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते' उक्तिकी समीक्षा कीजिये।

8) विकमांक देवचरितम् की ऐतिहासिकता पर टिप्पणी लिखिये।

9) कादम्बरी के आधार पर बाणभट्ट की भाषाशैली पर प्रकाश डालिये।

(खण्ड – स) $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें। आपको अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित करना है। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) 'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्' – उक्ति की समीक्षा कीजिये।

11) माघकाव्य की महाकाव्य की दृष्टि से समीक्षा कीजिये।

12) विक्रमांकदेवचरितम् के आधार पर कवि बिल्हण की काव्यशैली पर लेख लिखिये।

13) संस्कृत साहित्य की स्तोत्रविधा में आचार्य पुष्पदत्त प्रणीत शिवमहिम्नः स्त्रोत का क्या स्थान है ? स्पष्ट कीजिये।